गज़ब की लाईनें

रचयिता

कवि हृदय सिद्धान्तज्ञ आचार्य विनम्रसागर

1

कृति **गज़ब की लाईनें**

शुभाशीष :– जैनाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

रचयिता

प्रखर वक्ता आचार्य विनम्रसागर

2007 प्रथमावृत्ति : 2200 प्रति जयपुर
2016 द्वितीयावृत्ति : 2000 प्रति फिरोजाबाद

प्राप्ति स्थान :
सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, भिण्ड
देवेन्द्र जैन, बड़ी बजरिया, बीना ((07580-223344)
सीपुर समता तीर्थ धाम, सीपुर, 9828613614

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक – मुकेश जैन 9414555103
आर्यन् एजेन्सीज्
इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर (राज.)

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुनः प्रकाशन हेतु व्यवस्था राशि – 15/–रु.मात्र

2

हमारी नजर में अनूठा व्यक्तित्व

आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज का

प्रखर बुद्धि व श्रेष्ठ प्रतिभा के धनी परम पूज्य **आचार्य श्री विनम्रसागर जी** महाराज ने जन्म से ही प्रतिभा को अभिव्यक्त किया 5 वर्ष की उम्र में आप तीसरी क्लास में पढ़ते थे। पढ़ने में हमेशा अव्वल रहे मात्र 20 वर्ष की उम्र में (1984 में) आपकी एक विद्यालय में गवर्मेण्ट सर्विस लग गई थी 1986 में आपने एम.कॉम. जिला टॉप (दो विषय में विशेष योग्यता) प्राप्त करके प्रोफेसर पद के लिए तैयारी कर ली थी लेकिन एम.कॉम करने के बाद वही हुआ जो पुरुषार्थ लिखता है विधि ने वैराग्य की ओर मोड़ दिया और फिर विरक्त होकर सर्विस की तथा 8 अगस्त 1992 को सर्विस त्याग कर दी और 9 अगस्त 1992 को ऐलक बन गये तथा 8 जून 2003 को ललितपुर में मुनि दीक्षा प्राप्त की तथा 12 दिसम्बर 2010 में स्वगुरु के हस्तकमल से आचार्य पद पर सुशोभित हुए।

आचार्यश्री ने चारों अनुयोगों का विशेष अध्ययन किया आपके पिताजी प्रकाण्ड विद्वान थे उन्होंने भी मुनि दीक्षा प्राप्त करके सन् 2002 में बीना (म.प्र.) में समाधि प्राप्त की। विशेषता ये कि अपने पिता की समाधि उन्हीं के पुत्र आचार्यश्री ने कराई। **न्यायशास्त्र, नयशास्त्र, आध्यात्मिक शास्त्र व सिद्धान्त ग्रंथों का गुरुमुख से अध्ययन** करके हर बात पर मंथन किया। आचार्यश्री जैसी विचक्षण कला वर्तमान में किसी विरले ही साधु में देखने को मिलती है वह है काव्य शैली की कला हर काव्य पर लिखने का अधिकार रखने वाले धर्म की बात को व्यक्ति के

3

जेहन में उतार देते हैं आचार्य श्री की आवाज में ही संगीत निकलता है सभी आगम के ज्ञान के साथ काव्यकला होते हुए श्रेष्ठ प्रवचन शैली एवं निर्दोष चर्या का पालन आचार्यश्री का आकर्षक चुम्बकीय व्यक्तित्व है।

" जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि" लेकिन आचार्यश्री की बात है **"जहाँ न पहुँचे कवि वहाँ पहुँचे अनुभवी"** हर बात को अनुभव की कसौटी पर परखकर स्वीकार करने वाले हमेशा आगम की बात को ही श्रद्धान करने वाले, जिनकी भाषा शैली विवादों से रहित, पंथों से दूर केवल वीतरागी और निर्ग्रन्थ भाषा को बोलने वाले, जैन धर्म के मूलग्रंथ श्री धवलाजी, जय धवलाजी, महाधवलाजी का गुरुमुख से अध्ययन करने वाले करणानुयोग पर प्रकाण्ड विद्वत्तता रखने वाले प.पू आचार्यश्री के ऊपर लोगों ने पी.एच.डी. करने को कहा तो आचार्यश्री ने उस समय मना कर दिया क्यूँकि उस समय आचार्यश्री, ऐलक (सन् 1996 में) थे काव्य क्षेत्र में **लगभग 800 कविताएँ, 500 भजन, 300 गज़लें, 2000 मुक्तक, 2000 पहेलियाँ (पद्य में) दस तरह का हिन्दी में भक्तामर, जीवन चलती साँस यहाँ, जीवन जलता दिया यहाँ, गुरु चरणों की धूल यहाँ, जीवन है पानी की बूँद** आदि दस तरह के ऐसे गीतों पर **लगभग 2200 छंद** लिख चुके हैं जो पूरे भारत में प्रसिद्ध हो चुके हैं हर संगीतकार एवं साधु साध्वी जिन्हें गाकर व सुनकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं एवं सभी स्तुतियों के पद्यानुवाद, कई पूजायें व कई ग्रंथों के पद्यानुवाद किये हैं मुनि श्री ने **णमोकार महामंत्र को अंग्रेजी में** ऐसा लिखा है जिसे णमोकार मंत्र की तरह गाया जाता है एवं उसकी महिमा भी अंग्रेजी में गीत की तरह लिखी है वीतराग स्तोत्र एवं कई भजन भी अंग्रेजी में लिखे एवं 5 पुस्तकें भी अंग्रेजी में लिखी हैं।

4

आचार्यश्री के मामाजी कलेक्टर और प्रोफेसर हैं चाचाजी डॉक्टर और बैंक ऑफिसर है जीजाजी अनुसंधान अधिकारी दिल्ली एवं कई भाई सर्विस में हैं लेकिन आचार्यश्री का पूरा खानदान सोनगढ़ परम्परा का है केवल मुनिश्री के परिवार को छोड़कर।

आचार्यश्री का संस्कृत भाषा पर अच्छा वर्चस्व है शब्द विज्ञान जिन्होंने आत्मसात् किया है हिन्दी–अंग्रेजी, उर्दू, प्राकृत, संस्कृत और ज्योतिष भाषा का ज्ञान रखने वाले गुरुदेव ने कई पुस्तकों को लिखा है आकर्षक शैली वर्तमान परिवेश को प्रभावित करने वाली है। आचार्यश्री से प्रभावित होकर कई लोग दीक्षा ले चुके हैं और कई लोग ब्र.व्रत लेकर साधनारत हैं। आचार्यश्री सभी संघों से मिलकर अपनी विशेष चर्या की और तार्किक एवं मार्मिक ज्ञान की अलग छाप छोड़कर आते हैं। आचार्यश्री का भक्तामर और पूजन शिविर आज भी अद्वितीय बना हुआ है ऐसा भक्तामर शिविर पूर्व में किन्हीं भी साधुओं के द्वारा प्रतिपादित नहीं किया गया। आचार्यश्री को भक्तामर स्तोत्र व जिनेन्द्र पूजन का कोच (विशेषज्ञ) कहा जाता है।

आचार्यश्री के सभी वर्षायोग ऐतिहासिक रहे हैं लेकिन 2016 में फिरोजाबाद का वर्षायोग स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाने वाला है उसकी स्मृतियाँ व्यक्ति जीवन भर तक स्मरण करता ही रहेगा आचार्यश्री के भक्तामर शिविर और प्रवचन शैली की अनूठी मिशाल है हमारी समाज उनके चरणों में नममस्तक होती हुई आचार्यश्री के रत्नत्रय की उत्तरोत्तर वृद्धि की शुभकामना करती है और मन वचन काय से त्रिवार नमोऽस्तु करती है।

सकल दिगम्बर जैन समाज
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

5

रचयिता की कलम से

काव्य स्रजन की कला बहुत ही श्रेष्ठ कला है ये कला आत्मविभोर कर सकती है ये कला अपनी बात को बड़े मीठे ढ़ंग से बहुत आराम से कह सकती है सबको अपनी ओर आकर्षित कर सकती है कवि काव्य स्रजन में अपने समय का सदुपयोग करता है कविता के विषय को पहले अनुभूत करता है तत्पश्चात् काव्य कला और विद्वत्तता के बल पर उसे शब्दों में गूँथकर छंद बनाता है यह कला God gift कही जाती है ऐसी काव्यस्रजन की शक्ति हमें अपने गुरुदेव प.पू.**आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज** के आशीर्वाद और उनके प्रोत्साहन से प्राप्त हुई।

धार्मिक कविता लिखना, व्यंग्य लिखना, गीत ग़ज़ल लिखना आदि ये सब हमारे आत्मरंजन के साधन बन गये। हमने यह अनुभव किया कि काव्यरस से जीवन में स्वस्थता प्रकट होती है कोई भजन गाने पर आत्मिक शांति स्वयमेव अनुभूत होती है। साधू को काव्यकला हो तो इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है क्योंकि उसका मन निरंतर धर्म की बातों को छंदों में गूँथने में लगा रहता है।

हमारा काव्य रचना का ध्येय सिर्फ इतना ही है कि सारे लोग उन रचनाओं को पढ़कर गुनगुनायें और आनंदित होकर अपने जीवन में निर्मलता को प्राप्त कर सफल बनावें। इन कविताओं को बनाने में सारा श्रेय हमारे गुरुवर का है हम तो गुरु की कृपा से शब्दों को गूँथ देते हैं ऐसे श्रद्धेय गुरुवर के चरणों में त्रय भक्तियुत विनम्र नमोऽस्तु–3

Acharya Vinamra Sagar

6

Namokar Mahamantra

I bow to all Arihantas.
I bow to all Siddhas.
I bow to all Acharyas.
I bow to all Upadhyayas.
I bow to all Saints in the world

This Namokar mantra about to destroy all sins.
And the first is auspicious in the all auspicious

Acharya Vinamra Sagar

7

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

ऐसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं।।

8

वंदन

सभी अरिहंत को वंदन, नमन सिद्धों को मेरा हो,
सभी आचार्य को वंदन, मेरे दिल में सबेरा हो।
उपाध्यायों का अभिनंदन जो मुनियों को पढ़ाते हैं,
लोक में सर्वमुनियों को नमन आदर से मेरा हो।।

महावीर

जो अपने पर रहे कायम उसे गंभीर कहते है,
जो कष्टों को सहे हँसते उसे हम धीर कहते हैं।
मिला सबकुछ मगर फिर भी बनाया कुछ नहीं अपना,
सभी छोड़ा सभी पाया उसे महावीर कहते हैं।।

ठोकर

जहां में मुश्किलें दिल के इरादे आज़माती हैं,
सभी स्वप्नों के परदों को निगाहों से हटाती हैं।
हर इक ठोकर ने इंसां को यहाँ उठना सिखाया है,
ठोकरें ही हर इक इंसान को चलना सिखाती हैं।।

महावीर

दिल-ए उभरे जो आँखों से उसे तस्वीर कहते हैं,
जो जकड़े हाथ पाँवों को उसे जंज़ीर कहते हैं।
कि जिसने ध्यान की शमशीर से गम को मिटा डाला,
दिखाया आईना सच का उसे महावीर कहते हैं।।

कर जाता

पचा थोड़ा सा भोजन ही बहुत कुछ काम कर जाता,
धरम थोड़ा सा दिल में हो बुहत कुछ पुण्य भर जाता।
गुरु का नाम हो दिल में नहीं वह डूबने पाता,
बहुत गहरा भी हो सागर मगर वह पार कर जाता।।

बेड़ा पार होता है

लगाये शक्ति जो भव में वहीं संसार होता है,
नहीं गर फूल सा दिल है तो दिल में खार होता है।
करे तप खूब पढ़ता वेद पंडित हो न हो सम्यक्,
करें भगवान् की भक्ति तो बेड़ा पार होता है।।

समाधि से मरण

कषायों को शमन करके पुरानी है वमन करना,
घुटन सी ज़िंदगी अपनी नयेपन से चमन करना।
बनाओ दिल में अरमां ये कि मरते वक्त हम सबको,
गुरू के द्वय चरण आकर समाधि से मरण करना।।

महावीर

बिना मेहनत के मिल जाये उसे तकदीर कहते हैं,
जिसे कोई ना पढ़ पाये उसे तहरीर कहते हैं।
कि जिसके ज्ञान से कुछ भी अछूता है न दुनियाँ में,
उसी को सिर झुकाकर हम यहाँ महावीर कहते हैं।।

हँसकर

मेरा मेरी ही दौलत पर यहाँ अधिकार हो जाये,
अभी थी डूबती नैयाँ मेरी अब पार हो जाये।
गुरु जैसा यहाँ सच्चा हितैशी ढूँढ़ना मुश्किल,
हमें गुरुवर के चरणों से हमेशा प्यार हो जाये।।

सिखाया है

मेरे गुरुदेव ने हमको यहाँ चलना सिखाया है,
अंधेरी रात में रवि सा यहाँ जलना सिखाया है।
कभी गिरना नहीं पथ में अगर गिर जाओ ठोकर खा,
तो फिर तत्काल उठकरके सँभलना भी सिखाया है।।

कवायद

चलो मिलजुलके रहने की कवायद हम यहाँ कर लें,
न अब तक स्वर्ग पाया जो उसे दिल से यहाँ वर लें।
अभी तक गम के दरिया में हमेशा डूबते आये,
चलो गुरु की करें सेवा ये भव सागर यहाँ तर लें।।

देखो तो

ज़रा तुम सारी दुनियाँ से हाथ धोकरके देखो तो,
तुम्हारे पास जो भी है उसे खोकरके देखो तो।
यहाँ सबकुछ नसीब होगा मिलेगा वो जो चाहोगे,
ज़रा इक बार गुरुवर के यहाँ होकरके देखो तो।।

सकता हो

खुदा को जानता है वो जो खुद को जान सकता हो,
गुमां को छोड़ सकता वो जो खुद पहिचान सकता हो।
असर खुद में खुदा का हो वही बंदा सभी पाता,
उसी को सच मिले दिल में जो दिल में मान सकता हो।।

गुरू का प्यार

गुरू का प्यार पाने को समर्पण भाव लाना है,
हमें आशीष पाने को हृदय से गीत गाना है।
गुरू के पास सबकुछ है उसे पाना तुम्हें गर तो,
तहे दिल से करें सेवा उन्हें अपना बनाना है।।

बनती है

तहे दिल से तुझे देखूँ मेरी तकदीर बनती है,
तेरी तस्वीर देखूँ तो नई तद्बीर बनती है।
अज़ब अक्सीर है तेरी अज़ब हर चीज है तेरी,
तुझे दिल में बिठाऊँ तो नई तासीर बनती है।।

आँख का पानी

हमारी आँख का पानी हमें रस्ता दिखाता है
न हो आँखों में गर पानी वो रस्ता भूल जाता है।
फफोले पाँव में फिर भी खुशी चेहरे पे मिलने को
उसी के दिल में आकर के खुदा दर्शन दिखाता है।।

पाँव का काँटा

कहीं पर ज्ञान ज़लता है कहीं अज्ञान छलता है
ये मानव के विचारों के पहलुओं की विकलता है।
कहीं पाँवों तले गुल हैं कहीं काटों का है बिस्तर
हमारे पाँव का काँटा सिर्फ हमसे निकलता है।।

हँसकर

कोई हँस करके जलता है कोई जल जलके रोता है
कोई अंधियार खोता है कहीं तम और होता है।
चिराग अपना समझ अपनी सभी कुछ है यहाँ अपना
कोई हँसकर के पाता है कोई रोकरके खोता है ।।

लगी यारब

तेरी ज़ागीर पर मेरी नज़र हरदम लगी यारब,
परम तस्वीर पर मेरी नज़र हरदम टिकी यारब।
तुझे दिल में बिठाकरके तेरा वंदन करूँ हरदम,
तेरी तासीर पर मेरी नज़र हरदम झुकी यारब।।

इज़हार

हमारी आँख से ही सब यहाँ इज़हार होता है,
हो गर मुस्कान हल्की सी तो दिल से प्यार होता है।
तहे दिल से तुझे गुरु ने दिया आशीष प्यारा सा,
उसी बंदे का दुनियाँ में यहाँ उद्धार होता है।।

ज्ञान - चरित्र

जो सच अस्तित्व को माने उसे सम्यक्त्व कहते हैं,
सभी नय से यहाँ जाने उसे सच ज्ञान कहते हैं।
कषायें हो नहीं, इन्द्रिय विजय गुण व्रत समिति पाले,
ये षट् कर्त्तव्य करने को यहां चारित्र कहते हैं।।

पार होता है

जिये नाशाद दिल से जो तो जीवन भार होता है,
न हँसकर ज़िंदगी गुज़रे तो गम का भार ढ़ोता है।
सभी गम को यहाँ जिसने सहा है खूब हँसकरके,
उसी का इस ज़माने में सफ़ीना पार होता है।।

भी करना

न केवल फूल से करना प्यार काँटों से भी करना,
जो गिरते आदमी उनका यहाँ उद्धार भी करना।
स्वार्थ की ज़िंदगी हमको बहुत बेकार लगती है,
हो गर तुम आदमी तो आदमी से प्यार भी करना।।

मुश्किल

बुराई तो सरल करना, है अच्छाई बहुत मुश्किल,
गिराना है बहुत आसां, उठाना है बहुत मुश्किल।
किसी के गम के आँसू को स्वयं की आँख में लेकर,
स्वयं के ही समझ कर करके यहाँ पीना बहुत मुश्किल।।

आदम

ये आदम है ये आदम है सभी दम-खम यहाँ रखता,
महापर्वत उठाकरके स्वयं इक हाथ पर रखता।
बहुत ताकत है हाथों में अगर चाहे यहाँ आदम,
तो देवों के भी घर में जा बहुत हलचल मचा सकता।।

हो जाता

अगर मेरे 'हृदय' में प्रेम का संचार हो जाता,
तो दुनियाँ से यहाँ कबका मेरा उद्धार हो जाता।
गुरू के बिन भटकता ही रहा खाई कई ठोकर,
गुरू इक बार मिल जाते तो भव से पार हो जाता।।

हमने

सभी शास्त्रों को पढ़कर घिस दिया भगवान को हमने,
न तृष्णा छूट पायी और मिटाया ज्ञान को हमने।
धरम निर्वाण दाता, ज्ञान था चारित्र का दाता,
मगर धन सम्पदा चाही किया नहीं दान को हमने।।

इंसान

जो डूबे को किनारा दे उसे भगवान कहते हैं,
जो तिरने की कला दे दे उसे हम ज्ञान कहते हैं।
गरीबों की करे सेवा जो गिरतों को उठाता है
गैर का दर्द पीता हो उसे इंसान कहते हैं।।

बू आती

ये देखो आज हिन्दू को कुराणों से है बू आती,
उधर मुस्लिम को देखो तो पुराणों से है बू आती।
ये मंदिर और मस्जि़द हैं नहीं बू के यहाँ कारण,
हमें दिखता यहाँ इंसान को इंसां से बू आती।।

चिंता

सभी को नाम की चिंता न करते काम की कोई,
हमेशा दान की चिंता न करते दान की कोई।
कोई पानी में उतरे बिन कभी क्या तैर सकता है ?
करें आराम की चिंता न करते राम की कोई।।

गिरने में

महल सालों में बनता है न क्षण लगता उजड़ने में,
बड़ी मुश्किल से इज़्ज़त हो न क्षण लगता बिगड़ने में।
बनाने में लगे ताकत मिटाने में क्या जाता है,
यहाँ उठने में दिन लगते न क्षण लगता है गिरने में।।

व्यवहार

यहाँ कुछ लोग कहते हैं वो ऐसा और वैसा है,
न उसकी है यहाँ इज़्ज़त न उसके पास पैसा है।
जो ऐसा हमसे कहते हम उन्हीं से पूछते हैं ये,
कि पहले ये कहो तेरा यहाँ व्यवहार कैसा है?

मंगल है

स्वयं कन्या ही मंगल है दही नारियल भी मंगल है,
है गुड़ चावल यहाँ मंगल विवाह भी एक मंगल है।
यूँ देखें तो ये दुनियाँ में कई मंगल नज़र आते,
मगर सबसे परम उत्तम धरम ही एक मंगल है।।

जायेगा

तू मुट्ठी बाँधकर आया पसारे हाथ जायेगा,
न कुछ लाया था हाथों में न कुछ लेकर तू जायेगा।
सिकन्दर ने जहां जीता जरा सी मौत से हारा,
तू सोता सा यहाँ आया - मगर रोता सा जायेगा।।

लिख पाई

बहुत कुछ लिख दिया हमने न मन की बात लिख पाई,
बड़े गहरे किये अनुभव न दिल की चीज दिख पाई।
नहीं आसान है खुद को यहाँ पर जानना यारो,
लखी खुद ने लखा खुद को मगर फिर भी न लिखपाई।।

प्यार हो जाये

मेरा मंज़िल को पाने का यहाँ व्यापार हो जाये,
गुणों के भूषणों का ही दिले श्रृंगार हो जाये।
ये धरती पर नज़र फिरदौस आयेगा हमीं सबको,
अगर मानव से मानव को तहे - दिल प्यार हो जाये।।

निशानी है

हमारी ज़िंदगी दुख दर्द की ज़िंदा निशानी है,
गमों की आग ज्यादा है खुशी चूल्लू सा पानी है।
दर्द बनकर मेरा अनुभव यहाँ लफ्ज़ों में बहता है,
गज़ल, कविता, भजन गाना मेरी अपनी कहानी है।।

जायेगा

तू उल्टा हो यहाँ आया तू सीधा हो के जायेगा,
बहुत चिल्लया आने पर मगर चुपचाप जायेगा।
तेरी कमजोरियाँ दुनियाँ को ज़ाहिर हो गई सारी,
मरेगा तब भी गैरों से उठाया तुझको जायेगा।।

अरहंत

जहाँ पर पक्ष होता है वहीं पर पंथ होता है,
उठ जो पंथ से ऊपर वही निर्ग्रन्थ होता है।
हटाए राग द्वेषों को बना है वीतरागी जो,
वो सच्चा संत ही इक दिन यहाँ अरहंत होता है।।

आज़ाद पंछी

चलो आजाद पंछी बन उड़ें आकाश में जाकर,
स्वयं का हम करें अनुभव निजी विश्वास में आकर।
कभी हम भूल जायें आपसे अपने खुदा को गर
तो फिर विश्वास पैदा कर खुदा के पास में जाकर।।

पाक

कोई जलकर धुँआ होता तो कोई राख होता है
कोई बस ज्योति बनकर के जहां में पाक होता है।
अगर परमात्मा दिल में समाया हो यहाँ जिसके,
उसी का दिल खुदा जैसा हमेशा साफ होता है।।

कब भुलाओगे

ये दीपक को जलाकर के ये दिल तुम कब जलाओगे?
उसे गीतों में गा करके हृदय में कब बुलाओगे?
करो पूजा यहाँ अर्चन चढ़ाओ फूल फल आकर
दिले प्रभु को बिठाकरके ये दुनियाँ कब भुलाओगे ?

रस्ता

हमें अपने ही चिंतन से नया रस्ता बनाना है
जो अनुभव में नहीं आया उसे अनुभव में लाना है।
खुदा की रूह से अपनी मिलाना रूह दुनियाँ में
जो यारब के सिफ़्तें[1] उनको हमें अपना बनाना है।।

1 - गुण

विचार

यहाँ अपने विचारों से दुःखी हर आदमी यारो,
बहुत कुछ सोचता है पर न कुछ होता यहाँ यारो।
करें क्या हम ज़माने में ज़माना जानने सच में,
नज़र आता नहीं हमको कोई भी आदमी यारो ।

मंज़िल

जिसे मंज़िल न दिख पायी उसे संसार सूझेगा,
जिसे नहिं राह मिल पायी वही संसार घूमेगा।
जो खुद को भूलकरके जी रहे दुनियाँ में आकरके
न अपना पा सके वो घर समंदर में हि डूबेगा।।

दीपक

चलो अपने अंधेरे दिल में इक दीपक जला लें हम
अंधेरे में घुटन होने लगी अब तो मिटा लें हम ।
जहाँ देखो वहीं गम के नज़ारे हैं नज़र आते,
खुशी का दर खुदा का है वहीं मिटते हैं सारे गम ।।

अनुकूल - प्रतिकूल

अगर अनुकूल में हँसते तो प्रतिकूलों में रोना है
यहाँ प्रतिकूल में रोते तो अनुकूलों में हँसना है।
न प्रतिकूलों में रोना हो न अनुकूलों में हो हँसना,
वही आधार जीवित है वही अस्तित्व अपना है ।।

ख़्वाहिश

कभी जीने की ख़्वाहिश कर सभी को भूलकर यारो,
मिलें गर शूल राहों में उन्हें तू फूल कर यारो।
कोई प्रतिकूल में रोता कोई अनुकूल में हँसता
तुझे प्रतिकूल हो जो भी उसे अनुकूल कर यारो।।

अनुभव

यहाँ श्रद्धान हो ढीला तो ढीला ज्ञान हो जाता
ज्ञान कमज़ोर होने पर ये चारित्र डगमगा जाता
अगर श्रद्धान दृढ़ करना तो अनुभव से गुज़र जाओ
बिना अनुभव कदम अपना कभी दृढ़ हो नहीं पाता।।

निकलेगा

हमारे पाँव का काँटा मिरे हाथों हि निकलेगा,
निकल पाया न हाथों से तो वो काँटों से निकलेगा।
अगर हो जिस्म में काँटे निकल जाते हैं वो जल्दी,
लगा गर दिल में काँटा हो वो बातों से हि निकलेगा।।

जगा सकते

अगर अनुकूल है धरती तो फल उसमें उगा सकते
पसीजा दिल तुम्हारा गर तो आँखें भी भिगा सकते।
यहाँ सोया है जो सच में जगा सकते हैं हम उसको,
जो सोया जान करके हो उसे कैसे जगा सकते?

इंसान है

यहाँ इंसान का दुश्मन फकत इंसान है यारो,
भला मासूम सा चेहरा बड़ा शैतान है यारो।
सँभल करके यहाँ चलना बहुत धोखे हैं दुनियाँ में,
सँभल पाये न धोखे खा वो फिर नादान है यारो।।

बिछौना है

यहाँ जब तक है जीना तो फ़कत रोना ही रोना है,
जिसे अनुभव हुआ निज का उसे जीवन सलौना है।
वो चाहेगा यहाँ किसको सभी जो त्याग कर बैठा,
है चादर आसमां जिसकी ये धरती ही बिछौना है।।

आयेगी

अगर चाहोगे पैसे को तो ठोकर हाथ आयेगी,
प्रभु की चाह में दुनियाँ चरण में लोट जाएगी।
चाहे धन का खजाना हो चाहे महलों का हो वैभव,
स्वयं की चाह के द्वारा यहाँ सुख शान्ति आयेगी।।

ज़माने को

ज़माने को ज़माने की नज़र से देखना यारो,
बड़ी तादात में गिरगिट यहाँ मिल जायेंगे यारो।
न जाया वक्त हो अपना परखने में पराये को,
तुम्हें अपने ही घर अजगर यहाँ मिल जायेंगे यारो।।

मत करना

परायों से कभी भी राज की तुम बात मत करना,
कभी भी प्राणियों का तुम यहाँ पर घात मत करना।
अगर तुम आज जीवित हो जिओ उपयोग को लाकर,
जो करना हो अभी कर ले तू कल की बात मत करना।।

सीखोगे

न रस्ते शूल से पाटो बिछा दो उसमें फूलों को,
न तुम मझधार में डूबो पकड़ ले आप कूलों को।
न तुम पढ़ करके सीखोगे न सीखोगे किसी से तुम,
तमन्ना सीखने की है तो कर ले याद भूलों को।।

माला - खंजर

किसी के हाथ में खंज़र किसी के हाथ में माला,
किसी का दिल है फूलों सा किसी का दिल बना हाला।
यहाँ फूलों को बाँटोगे तो खुशियों की बने बगिया,
किसी के पाँव में काँटे किसी के है गले माला।।

तासीर

सभी में देख लूँ रब को वो दे तासीर आँखों में,
परिंदों सी उड़ानों को भरुँ अपने हि पाँखों में।
तू हर धड़कन, नज़ारे में नज़ाकत में नज़र आये,
कभी दिल में नज़र आये नज़र आये तू साँसों में।।

मेहमान

यहाँ मेहमान, दुश्मन को बना लेते हैं हम यारो,
हो गर शैतान तो इंसां बना लेते हैं हम यारो।
नज़र अच्छी दिले तो खुशनुमा होंगे सभी मंज़र,
यहाँ भगवान, पत्थर को बना लेते हैं हम यारो।।

नया जीवन

चलो मिलजुल के रह करके नया जीवन बना लें हम,
न पाया आज तक हमने उसे हिम्मत से पा लें हम।
मिटा दें दुश्मनी के लेख दिल से हैं पुराने जो,
नये जन्नत के रस्ते को यहाँ हँस के बना लें हम।।

ठहरता है

पिता माँ को न पूजा है - न की गुरु की कभी सेवा,
सकूँ दिल में मिले कैसे - न खाने को मिले मेवा।
जो खुद सा दर्द गैरों का समझता है उसी के दिल,
ठहरता है स्वयं आकर कोई अरहंत जिनदेवा।।

करो आकर

अगर गाना नहीं आता तो गाया मत करो आकर,
यहाँ खाना नहीं आता तो खाया मत करो आकर।
न है अपनत्व दिल में तो दिखाने के लिए यारो,
यहाँ बेकार में आँसू बहाया मत करो आकर।।

कीमत

यहाँ हर वक्त की कीमत चुकानी हैं हमें यारो,
मेरे जीवन की ये चादर पुरानी हो गई यारो।
न जाना धर्म को हमने न खुद को जान पाया हूँ,
जहाँ में भोग विषयों की निशानी बन गये यारो।।

मिलता है

नहीं संगीत हो दिल में मधुर नहिं गान मिलता है,
लगायें गर न बोली तो यहाँ नहिं दान मिलता है।
यहाँ सम्मान और इ़ज्ज़त अमीरों के खिलौने हैं,
गरीबों को न सामाजिक यहाँ सम्मान मिलता है।।

बनाता है

क्रोध ही स्वर्ग सा जीवन नरक जैसा बनाता है,
हमारे सर्व अच्छे गुण यहाँ जिन्दा जलाता है।
क्रोध जैसा ज़हर हमको नज़र आता न दुनियाँ में,
यही इंसान को यारो जहाँ हैवां बनाता है।।

क्या होगा ?

नहीं गर दाग मिट पाया तो फिर धोने से क्या होगा?
नहीं हो दर्द गर दिल में तो फिर रोने से क्या होगा?
करो पूजा महा अर्चन चढ़ाओ द्रव्य थाली भर,
न दिल में भक्ति हो सच्ची तो भक्त होने से क्या होगा?

जाते हैं

नदी सागर में मिल जाये किनारे छूट जाते हैं,
हो पतझड़ का अगर मौसम तो पत्ते टूट जाते हैं।
जो कर्तव को यहाँ भूले नहीं सेवा करें गुरु की,
सहारे उनके खुशियों के यहाँ पर रूठ जाते हैं।।

बदल सकते

अगर चाहें तो गिरने से हि पहले हम संभल सकते,
निजी पुरुषार्थ के बल पर लिखा, उसको बदल सकते।
करम सच्चा हो हिम्मत तो हमारे हाथ में सब है।
नरक सी इस जमीं को भी स्वर्ग में हम बदल सकते।।

भगवान होना है

बहुत ही है कठिन हँसना मगर आसान रोना है,
आज सम्मान का भू - पर यहाँ अपमान ढोना है।
कभी भी तुम न दुख देना किसी भी आदमी को यूँ,
इसी आदम को ही इक दिन यहाँ भगवान होना है ।।

दवा का दर्द ने

खुशी को गम ने ही यारो यहाँ अच्छा बनाया हैं,
सभी फूलों को काँटो ने स्वयं ऊपर उठाया हैं।
हो दिल में मोह तो अच्छी सुहानी सी लगे दुनियाँ,
दवा को दर्द ने यारो यहाँ सुंदर बनाया है।।

कला सीखो

हार को जीत में यारो बदलने की कला सीखो,
रुदन को गीत में यारों बदलने की कला सीखो।
यहाँ पर ज़िंदगी की असलियत को जानना अब तो,
दुश्मनी दोस्ती में तुम बदलने की कला सीखो।।

हकदार

जो तिल-तिल दीप सा जलकर सही रस्ता दिखाता है,
यहाँ इतिहास ही सारा उन्हीं के गीत गाता है।
जो विष पीकर हमेशा ही यहाँ अमृत उगलता है,
वही हकदार मंज़िल का स्वयं का राज्य पाता है।।

जीता इंसान

तुम्हें जीता हुआ कोई यहाँ इंसान दिख जाये,
तो समझो खुद यहाँ भगवन् दिखाने सब यहाँ आये।
मगर जो देखकर सब ही नहीं कुछ काम कर पाये,
बताओ तुम उसे यारो यहाँ पर क्या कहा जाये?

पा लो तुम

है जब तक साँस धड़कन में नया विश्वास पा लो तुम,
न जब तक पाँव थक पायें नया आवास पा लो तुम।
पता किसको है पंछी कब ये पिंज़रा छोड़ दे यारो,
हो जितना जल्द जीवन का यहाँ आभास पा लो तुम।।

धरम

घड़ी जो बीत जायेगी कोई लौटा न पायेगा,
कमा लो धन बहुत सारा न कुछ भी साथ जायेगा।
सुपुर्दे खाक तू होगा पड़ा होगा जमीं पर सब,
सिर्फ अच्छे विचारों का धरम ही काम आयेगा।।

क्या हैं

नहीं बरसे यहाँ बादल वो बादल काम के क्या हैं?
न भीगे दर्द में ये दिल तो फिर दिल काम के क्या हैं?
तड़पता धूप से देखो मगर फिर भी रहा खाता,
वो आदम सा कोई पशु है जमीं पर काम के क्या हैं?

दे दो

न स्वर्गों सा महल चाहूँ हमें नर्कों सा घर दे दो,
न दौलत सम्पदा चाहूँ हमें गम का असर दे दो।
शिकायत को न लाऊँगा न चेहरे पर शिकन कोई,
हमें गुरु साथ रहने का वचन देकर सफर दे दो।।

पायेगा

नहीं विश्वास पंखों पर वो क्या ऊँचाई पायेगा?
नहीं विश्वास चरणों पर वो क्या मंज़िल पे जायेगा?
साँस लेकर यहाँ जीना न मकसद ज़िन्दगी का है,
नहीं ज़िन्दादिली दिल है वो क्या विश्वास पायेगा?

मधुर वाणी

मधुर वाणी से लोगों के हृदय टूटे मिलाता है,
गरीबों दीन दुखियों पर यहाँ सबकुछ लुटाता है।
न करता रात में भोजन - पिये जो छानकर पानी,
जो रोता गैर के दुख में वही जैनी कहाता है।।

गुजरती है

किसे चिन्ता है मानवता यहाँ जीती या मरती है,
हमारी संस्कृति घर में उभरने को तरसती है।
कि जिनसे बन पड़े नेता बिलासी कोठियों वाले,
गरीबों से जरा पूछो कि उन पर क्या गुज़रती है ?

इंसानियत

रहे जो पास साधु के न कुछ सीखे तो नादां है
मिले पानी, जमीं बंजर रहे तो खेत वीरां है।
यूँ सज्दे में शरीक होकर समझना मत मैं इंसां हूँ,
जहाँ इंसानियत दिल में वो दिल वाला ही इंसां है।।

गुरू के गुण

हैं रेगिस्तान में कण, रेत के गिनना उन्हें संभव,
समंदर की सभी बूँदों को गिनना भी यहाँ संभव।
मगर लाखों करोड़ो साल जीकर इस जमीं पर भी,
गुरु के गुण यहाँ गिनना मुझे लगता नहीं संभव।।

कल्याण

करें पूजा तो ये पत्थर नहीं भगवान होता है,
कोई आकार पाकरके नहीं इंसान होता है।
करो पूजा पढ़ो तुम ग्रन्थ दस उपवास भी कर लो,
धर्म के आचरण के बिन नहीं कल्याण होता है।।

रखता है

न आफ़त के समय कोई किसी का ध्यान रखता है,
न स्वारथ में कोई भाई बहिन का ध्यान रखता है।
तुम्हें अपनत्व लाना हो तो करना प्रेम यारब से,
खुदा हर हाल में सबका हमेशा ध्यान रखता है।।

दीपक

न हो गर तेल दीपक में तो दीपक भी नहीं जलता,
बुझे दीपक को लेकर के कोई पथ पर नहीं चलता।
हज़ारों शास्त्र पढ़कर भी नहीं संयम जरा सा हो,
तो उसका ज्ञान का पौधा कभी गुण से नहीं फलता।।

आये हैं

गये मंदिर जपी माला प्रभु गुणगान गाये हैं,
करी अर्चा सुनी चर्चा नये अरमान लाये हैं।
किसी ने जब ये पूछा क्या हुआ मंदिर में बतलाओ,
तो बोले फूल बरसाओ मेरे गुरुदेव आये हैं।।

पढ़ लो तुम

किसी से दर्द मत पूँछो यहाँ चेहरे को पढ़ लो तुम,
सभी कहती हैं ये आँखें जरा आँखों से पढ़ लो तुम।
हमेशा बन यहाँ हमदर्द दिल की बात पूँछोगे,
सभी तुम जान जाओगे जरा दिल में ये गढ़ लो तुम।।

साधु

साथ हो साधु का गर तो दिखाई सार देता है,
हमें इंसान में खिलता दिखाई प्यार देता है।
बिना साधु के दुनियाँ में न होली है न दीवाली,
वो साधु ही सभी जन को दिखा त्यौहार देता है।।

साथ देती है

अवस्था बाल्य हो अपनी तो मिट्टी साथ देती है,
हो यौवन की चमक तन में तो शक्ति साथ देती है।
बुढ़ापे में हमारा साथ मुक्ति ही निभाती है,
हो मरणासन्न हालाते तो भक्ति साथ देती है।।

चरण पकड़ो

पराये देश जाना हो तो गाड़ी जल्द तुम पकड़ो,
हजारों बार मरना तो ये भव मकड़ी सा तुम ज़कड़ो।
हकीकत को हकीकत में हृदय से मान लो यारो,
खुदा के पास जाना हो तो गुरु के द्वय चरण पकड़ो।।

लगा जाओ

जलाना है तो हर दिल में नया दीपक जला जाओ,
दिखाना है तो भटके को नया रस्ता दिखा जाओ।
दो ऐसा प्यार सबके दिल में दिल फूलों सा खिल जाये,
लगाओ बाग हर घर में गले सबको लगा जाओ।।

दिखा डालो

अहं काला अंधेरा है इसे जल्दी मिटा डालो,
ये मिथ्या साँप काला है सपेरे को दिखा डालो।
अहं-मिथ्यात्व मिलकरके हमें दुनियाँ भ्रमाते हैं,
इन्हें सम्यक्त्व का चेहरा यहाँ जल्दी दिखा डालो।।

गृहस्थ

सुबह से शाम तक धन में ये ऐसे मस्त रहते हैं,
कि दिनभर व्यस्त रह करके शाम को लस्त रहते हैं।
हमेशा पस्त, रहते ग्रस्त, खाते गश्त दुनियाँ में,
उन्हें हम प्रेम से यारो यहाँ पर गृहस्थ कहते हैं।।

भूल जायेगा

मेरा अनुभव यही कहता वही शिव राह पायेगा,
जो गुरु भगवान पर हरदम यहाँ श्रद्धान लायेगा।
हमें गुरुओं की सेवा से हमेशा लाभ ही होगा,
जो गुरु को भूल जायेगा वो खुद को भूल जायेगा।।

निंदा

जो निंदा गैर की करता - वो गूँगा भी जरूर होगा,
सुने निंदा बड़ी रूचि से - वो बहरा भी जरूर होगा।
अगर निंदा हि करनी और सुननी थी तो अपनी कर,
करेगा गर यहाँ अपनी तो सज्जन तू जरूर होगा।।

मज़हब

धर्म जीने की इंसां को कला सुंदर सिखाता है,
स्व अंतस् में पहुँचने की कला सबको बताता है।
धरम ही जोड़ता टूटे हुये दिल को यहाँ यारो,
यहाँ इंसान को भगवान ये मज़हब ही बनाता है।।

मुकद्दर का

न जिनका घर है शीशे का उन्हें डर है न पत्थर का,
किसी से डर नहीं फिर भी कवच है लौह चद्दर का।
कि जिसने दुश्मनों को भी गले अपने लगाया है,
वो बंदा मर नहीं सकता सिकंदर है मुकद्दर का।।

दरिया दिल

नज़र खिड़की से आया जो उसे ही आसमां जाना,
जहाँ रहता मेरा यारब वहाँ हमने कहाँ जाना?
भटकते ही रहे अब तक दरो दीवार में यारो,
न दरिया दिल बना पाया न घर को इक मकां जाना।।

जानना

अगर सच जानना हमको तो सच में सच पुकारो तुम
कहीं पर झूठ दिख जाये उसे सच से प्रहारो तुम।
कोई सच का सफ़ा दर्पण दिखाये गर सच्चाई को,
तो सच को जानकर यारो उसे दिल से दुलारो तुम।।

मुनि श्री द्वारा रचित एवं संकलित साहित्य की तालिका

1. तन्मयता की बेला – (पूजन शिविर) — मूल्य 20 रु. 192 पेज
आज की नवीन पीढ़ी के लिए विधिपूर्वक आगमानुसार भगवान की पूजन करने का सही ढंग, जिसमें भक्तामर स्तोत्र, स्वप्न फल, सूतक पातक एवं नये ढंग से मधुरमय अर्घावली

2. भक्तामर स्तोत्र – (भक्तामर शिविर) — मूल्य 25 रु. 224 पेज
शुद्ध भक्तामर स्तोत्र को सही ढंग से तोड़कर लिखा गया है जिसमें नई धुन पर सात तरह का पद्यानुवाद है, ऋद्धि मंत्र व फल विवेचन भी है।

3. दैनिक कर्तव्य – — मूल्य 30 रु. 320 पेज
श्रावक के करने योग्य सभी स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र सामायिक पाठादि, द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश आदि चौघडिया, सूतक पातक

4. भक्ति की छलक — मूल्य 10 रु. 96 पेज
90 नवीन भजन आचार्य श्री द्वारा रचित

5. समंदर की लहरें – — मूल्य 10 रु. 96 पेज
लगभग 90 भजन आचार्य श्री द्वारा रचित

6. अंतस् का पराग – — मूल्य 10 रु. 96 पेज
लगभग 90 भजन आचार्य श्री द्वारा रचित

7. आस्था के स्वर — मूल्य 10 रु. 96 पेज
लगभग 90 भजन आचार्यश्री द्वारा रचित

8. जिनसहस्र नाम स्तोत्र — मूल्य 15 रु. 80 पेज

9. **Philosophy of Karma** – कर्म विज्ञान – — मूल्य 15 रु.
कर्मो का विवेचन प्रश्नोत्तर में – आचार्य श्री द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद

10. बोलती कविताएँ – — मूल्य 100 रु. 160 पेज
आचार्य श्री द्वारा लगभग 200 स्व रचित कविताएँ साहित्यिक – धार्मिक एवं व्यंगात्मक

11. जमाने का सच– — मूल्य 30 रु. 120 पेज
आचार्य द्वारा नये नये चिंतनों का अनूठा संकलन एवं मुनि श्री के दीक्षा चित्र व उनके विशेष अनुभव

12. हकीकत का पैगाम – — मूल्य 30 रु. 120 पेज
आचार्य श्री द्वारा मंथन का निचोड़ व तर्क के आधार पर नये – नये अनूठे विचारों का संगम

13. ज़िंदगी क्या है? – — मूल्य 15 रु.
आचार्य श्री का रंगीन चित्र एवं ज़िंदगी के बारे में महत्वपूर्ण तीन प्रवचनों का संकलन

14. सच क्या है? – — मूल्य 15 रु.
तेरा पंथ–बीस पंथ और विशाल सच का स्वरूप, मूढ व मूर्ख में, भूले व भोले में अंतर – सच्चा धर्म और झूठा पंथ का अहंकार क्या है?

15. ख़जाने के मोती – — मूल्य 30 रु. 105 पेज
आचार्य श्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक

16. तासीर के मंज़र – — मूल्य 30 रु. 105 पेज
आचार्य श्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक

17. What is Life – — मूल्य 20 रु.
आचार्य श्री द्वारा प्रवचन की पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद (प्रेस में)

18. What is truth – — मूल्य 25 रु.
आचार्य श्री द्वारा लिखित पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद (प्रेस में)

19. जानिये सम्यक् दीपावली – — मूल्य 10 रु.
सही तरीके से दीपावली मनाने की विधि

20. Moral Science for Children — मूल्य 50 रु.
Part I,II,III मुनि श्री द्वारा English Translation

21. English Quatation — मूल्य 25 रु.
मुनि श्री द्वारा English में रचित सूक्तियाँ (धार्मिक एवं व्यावहारिक) (प्रेस में)

22 – सामायिक पाठ –
संस्कृत/हिंदी पद्यानुवाद व प्रतिक्रमण — मूल्य 15 रु.

23. गा लो गुरु गुणगान –
मुनि श्री द्वारा गुरूदेव के ऊपर लिखित 4 पूजन व भजन — मूल्य 5 रु.

24. अपना भविष्य जानो (Know your Future)
मुनि श्री द्वारा लिखित हिन्दी व म्दहसपी में — मूल्य 15 रु. व 25 रू.

25. ऐसा क्यों ?
युवा पीढ़ी की नई शंकाओं के तर्क सहित अनूठे और सटीक उत्तर — मूल्य 15 रु.

26. अनुभूतियों के भँवर
ग़ज़ल की तर्ज पर 100 कविताओं के मार्मिक छनद — मूल्य 15 रू 112 पेज

27. ग़ज़ब की लाइनें
गीतमय छन्द पर 100 कविताऐं — मूल्य 15 रू 112 पेज

28. असरदार लाइनें
दिल पर सीधा असर देते 100 कविताओं के छन्द — मूल्य 15 रू 112 पेज

29. गुनगुनाता संदेश

जिन 100 कविताओं में गहरा उपदेश भी छिपा है और वह भी गीतमय है — मूल्य 15 रू 112 पेज

30. जब मिल जाये रे .....
आचार्य श्री के गुरु भक्ति के ऊपर विशेष प्रवचन (काव्य युक्त) — मूल्य 15 रू 54 पेज

31. कल्याण मन्दिर स्तोत्र
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के शिविर हेतु शुद्ध सम्पादन में प्रेषित एवं पद्यानुवाद — मूल्य 15 रू 112 पेज

32. होनी अनहोनी
जीवन है पानी की बूँद, जीवन जलता दिया यहाँ, गुरुवर का आशीष हमें, — मूल्य 25 रू 192 पेज
जीवन चलती सांस यहाँ, अंग्रेजी में भजन व सूक्तियाँ

33. स्वर्ग नरक
स्वर्ग–नरक क्या है विशेष प्रवचन — मूल्य 15 रू

34. विराग सुमन (प्रेस में)
35. विराग वन्दना (प्रेस में)
36. सच्चे ज्ञान की पहिचान (प्रेस में)

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ भिण्ड	**श्री देवेन्द्र जैन** बड़ी बजरिया, बीना (सागर) – 07580–223344	**सीपुर समता तीर्थ धाम** सीपुर 9828613614